Date ... for any query
Page ... 9534808571

सुहरावर्दी संप्रदाय

संस्थापक - शेख जियाउद्दीन (शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी)

⇓

शेख बहाउद्दीन जकारिया (शिष्य)

⊜ चिश्ती संप्रदाय के बाद सबसे लोकप्रिय संप्रदाय - सुहरावर्दी संप्रदाय था।

⊜ मुख्यालय - मुल्तान

⊜ शेख बहाउद्दीन जकारिया - भारत में सुहरावर्दी संप्रदाय का प्रचार-प्रसार किया।

→ उच्च शिक्षा हेतु मदीना व बगदाद गये, वहीं उनकी मुलाकात शेख शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी से हुई और उनके शिष्य बन गये। इन्होंने मुल्तान को अपना केन्द्र बनाया। उस समय मुल्तान कुबाचा की राजधानी थी।

शेख बहाउद्दीन जकारिया — संबंध अच्छे नहीं थे — कुबाचा

शेख-उल-इस्लाम (उपाधि) (प्रधान काजी)

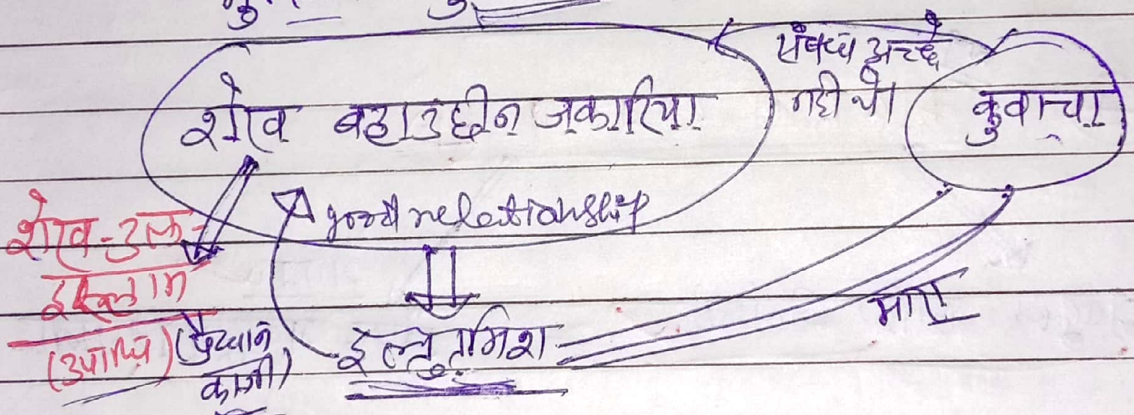

good relationship ⇓ इल्तुतमिश

कुबाचा → मारा → इल्तुतमिश

⊕ सैयद जलालुद्दीन जहानियां जहांगश्त ⊕

⇓

शेख उल-इस्लाम (प्रधान काजी) ← फिरोजशाह शाह तुगलक

⇓

36 बार मक्का की यात्रा ⇒ जहानियां जहांगश्त कहा जाता था।

by Dr. Dilip Kr.

सुहारवर्दी शाखा के अन्य संतों में

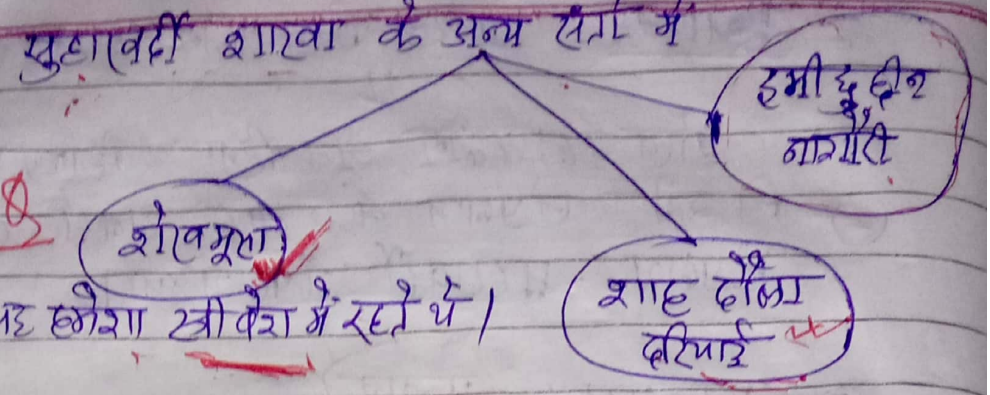

- शेखमूसा — यह हमेशा स्त्री वेश में रहते थे।
- शाह दौला दरियाई
- हमीदुद्दीन नागौरी

फिरदौसिया संप्रदाय

संस्थापक :- शेख बदरुद्दीन समरकंदी — राजगीर को अपना केन्द्र बनाया

यह सुहारवर्दी संप्रदाय से निकली एक शाखा

प्रसिद्ध संत :- शेख शर्फुद्दीन यह्या मनेरी

कादरिया संप्रदाय

- अब्दुल कादिर जिलानी
- सैयद मकदूम जिलानी (भारत)

इस संप्रदाय के लोग गाने बजाने के विरोधी थे। ये हरे रंग के पगड़ी और उसमें लाल गुलाब के फूल लगाते थे।

⇒ दाराशिकोह - कादरिया संप्रदाय को मानता था।

⇒ सिकन्दर लोदी भी मकदूम जिलानी का शिष्य था।

⇒ अगला कादिरी सम्प्रदाय का प्रचारक — शेख हमीद गंज बख्श
पुत्र शेख मूसा
अकबर का समकालीन थे
5000 मनसब प्रदान

शेख मीर (मियां मीर) ⇒ जहांगीर और शाहजहां के समकालीन
1635 ई० में मृत्यु ≠ मुल्ला शाह बदख्शी

दाराशिकोह → प्रथम शिष्य थे → (दीक्षा) ← जहांआरा बेगम

जहांआरा बेगम - ने मुल्ला शाह बदख्शी के अपर जीवन वृतांत साहिबिया उपनाम से लिखी

⇒ दाराशिकोह ने शेख्या - तुल - औलिया नाम से मियां मीर पर जीवन कथा लिखा। मुगल वंश का सबसे पढ़ा-लिखा शासक दाराशिकोह था (अकबर - अनपढ़) - 52 उपनिषद का फ़ारसी में अनुवाद सिर्रे अकबर

Q (सिर्रे अकबर = महान रहस्य) इसे कहीं कहीं सिर्रे असरार (रहस्यों का रहस्य) कहा गया है।